ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 226-228

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

जैविक खेती का ग्रामीण समाज पर प्रभाव

1. डॉ0 राजेश त्रिपाठी
2. अभिलाषा सिंह

1. एसोसिएट प्रोफेसर, 2. शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, सतना, (म0प्र0) भारत

Received-11.06.2023, Revised-16.06.2023, Accepted-20.06.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य जैविक खेती का ग्रामीण समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना हैं। जैविक खेती वर्तमान समय में स्वास्थ्य की दृष्टि से सम्पूर्ण समाज की आवश्यकता है। ग्रामीण समाज पर भी अधिक जानकारी न होने से वर्तमान रूप में अपनायी गयी कृषि उत्पादन की पद्धतियां उन्हें आर्थिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से कमजोर कर रही हैं। इस परिस्थिति में सरकार की ओर से भी जैविक खेती के लिए प्रयास किये जा रहे हैं। ग्रामीण समाज पूर्व से ही इसका अनुभव रखता है इसलिए आवश्यकतानुसार उसको अपनाने के लिए इन्हें कोई कठिनाई नहीं है।***

प्रस्तुत अध्ययन में जैविक खेती के ग्रामीण समाज के लिए आवश्यकता एवं इसके प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु शोध पद्धति में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि अपनाई गयी है।

कुंजीभूत शब्द– जैविक खेती, ग्रामीण, उर्वरक, उत्पादन, पर्यावरण प्रदूषण, ग्रामीण समाज, खेती, कृषि उत्पादन, आर्थिक, स्वास्थ्य।

मृदा, पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य को सशक्त बनाए रखने के लिए जैविक खेती नितांत आवश्यक हैं। जैविक खेती के मामले में भारतीय किसानों ने दुनिया भर में नया मुकाम हासिल कर लिया हैं। भारत में जैविक खेती करने वाले किसानों की संख्या सर्वाधिक हैं, जबकि खेती रकबा के मामले में दुनियाभर में देश नौवें स्थान पर हैं। जैविक कृषि उपज के बेहतर मूल्य मिलने से जहाँ किसानों को लाभ मिल रहा हैं। वहीं उपभोक्ताओं को स्वास्थ्यवर्धक व गुणवत्तायुक्त उत्पाद मिलने लगे हैं।

जैविक खेती एक पर्यावरण अनुकूल कृषि प्रणाली हैं। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए सरकार पारम्परिक संसाधनों का इस्तेमाल करके पर्यावरण अनुकूल कम लागत की प्रौद्योगिकियों को अपनाकर जैविक खेती को बढ़ावा दे रही हैं। इसका उद्देश्य रसायन मुक्त उत्पादों और लाभकारी जैविक सामग्री का प्रयोग करके मृदा स्वास्थ्य में सुधार और फसल उत्पादन को बढ़ावा देना हैं। इससे उच्च गुणवत्ता वाली फसलों के उत्पादन के लिए मृदा को स्वस्थ और पर्यावरण प्रदूषण मुक्त बनाया जा सकता हैं।

जैविक खेती पर्यावरण सुरक्षा एवं मृदा उर्वरता की वृद्धि में निम्न प्रकार से योगदान दे सकती हैं –

1. जैविक खेती से हरितगृह गैसों (मीथेन, कार्बन–डाई आक्साइड, नाइट्रस आक्साइड, सल्फर–डाई आक्साइड) का कम उत्सर्जन होता हैं।
2. मृदा से नाइट्रेट लीचिंग (निक्षालन) में कमी आती है जिससें भूमिगत जल की गुणवत्ता में सुधार आता हैं।
3. मृदा में दीर्घ कालीन संचयन होता हैं जो जलवायु में होने वाले परिवर्तनों के प्रभाव को कम करता हैं।
4. जैविक खेती में मृदा के भौतिक रासायनिक और जैविक गुणधर्मों में सुधार होता हैं।

जैविक खेती में अनेक प्रकार के फसलों के रूप में सब्जियों, फलों, सोयाबीन, चाय, चावल, दलहन इत्यादि की सर्वाधिक मांग हैं। बीरबल साहू के अनुसार "जैविक खेती ही प्राकृतिक खेती है। जो प्राचीन समय में की जाती रही थी जिसकी और किसान पुनः लौट रहे हैं। जैविक खेती को धीरे–धीरे फायदे का सौदा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा हैं। जिससे हमारा उद्देश्य किसानों को उनके उत्पादन की पहचान व उचित मूल्य दिलाना हैं।" धंसू राम टेकाम व अन्य किसानों का कहना है कि "हम खेती के लिए खाद, कीटनाशक बीज निर्माण जैसे सभी काम आपस में मिलकर करते है इसलिए खेती में हमारी लागत कम आती है, जिसका हमें मुनाफा मिला हैं।" पुष्पा साहू के अनुसार "जैविक खेती अपने घर की छत पर करती हैं। जिसमें फलों के साथ फूल, सब्जी और औषधीय पौधे लगाती है ऐसा करने से घर की जरूरत तो पूरी होती ही हैं।"

उद्देश्य–

1. जैविक खेती का कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. जैविक खेती में जैविक खाद की आवश्यकता का अध्ययन करना।
3. जैविक खेती से आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र– जैविक खेती का ग्रामीण समाज पर प्रभाव का अध्ययन कौशाम्बी जिले के मूरतगंज विकासखण्ड के दो ग्राम क्रमशः पट्टीनरवर और इब्राहिमपुर नौगीरा का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया।

निदर्शन– इस शोध कार्य हेतु प्रत्येक ग्राम से 50 ऐसे लोग जो जैविक खेती के कार्य में संलग्न है का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया। इस प्रकार दोनों ग्राम से 100 लोगों का चयन किया जाएगा।

उपकरण– साक्षात्कार अनुसूची।

तालिका संख्या–1 जाति

क्रम संख्या	जाति	संख्या	प्रतिशत
1	सामान्य वर्ग	25	25.00
2	अन्य पिछड़ा वर्ग	40	40.00
3	अनुसूचित जाति	35	35.00
4	अनुसूचित जनजाति	00	00.00
	योग	**100**	**100.00**

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 100 उत्तरदाता में सामान्य वर्ग के उत्तरदाता की संख्या सबसे कम हैं, प्रतिशत 25 हैं। अन्य पिछडा वर्ग के उत्तरदाता की संख्या सबसे अधिक हैं, प्रतिशत 40 हैं। अनुसूचित जाति के उत्तरदाता का प्रतिशत 35 हैं, जबकि अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत नगण्य हैं। अतः स्पष्ट है कि अन्य पिछडा वर्ग के उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक हैं।

तालिका संख्या–2 व्यवसाय

क्रम संख्या	व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
1	मजदूरी	19	19.00
2	कृषि	60	60.00
3	व्यापार	10	10.00
4	अन्य कार्य	11	11.00
	योग	**100**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि 100 उत्तरदाता में मजदूरी करने वाले उत्तरदाता का प्रतिशत 19 हैं, कृषि से जुड़ें उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक है, प्रतिशत 60 हैं, व्यापार करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे कम हैं, प्रतिशत 10 हैं। जबकि अन्य कार्य से जुड़ें उत्तरदाता का प्रतिशत 11 हैं। अतः स्पष्ट है कि कृषि करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे अधिक हैं।

तालिका संख्या–3 उर्वरक

क्रम संख्या	उर्वरक	संख्या	प्रतिशत
1	गोबर की खाद	50	50.00
2	हरी खाद	05	05.00
3	वर्मी कम्पोस्ट	40	40.00
4	अन्य	05	05.00
	योग	**100**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 100 उत्तरदाता में गोबर की खाद का प्रयोग करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे अधिक हैं, प्रतिशत 50 हैं। हरी खाद एवं अन्य प्रकार के उर्वरक का प्रयोग करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे कम है, प्रतिशत 05 हैं। वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग करने वाले उत्तरदाता का प्रतिशत 40 हैं। अतः स्पष्ट है कि गोबर की खाद का इस्तेमाल करने वाले उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक हैं।

तालिका संख्या–4 फसल

क्रम संख्या	फसल	संख्या	प्रतिशत
1	आलू	40	40.00
2	मिर्च	25	25.00
3	प्याज	15	15.00
4	अन्य	20	20.00
	योग	**100**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 100 उत्तरदाता में आलू का उत्पादन करने वाले उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक हैं, प्रतिशत 40 हैं। मिर्च का उत्पादन करने वाले उत्तरदाता का प्रतिशत 25 हैं। जबकि प्याज का उत्पादन करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे कम हैं, प्रतिशत 15 हैं। अन्य प्रकार के फसल का उत्पादन करने वाले उत्तरदाता का प्रतिशत 20 हैं। अतः स्पष्ट है कि आलू का उत्पादन करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे अधिक हैं।

तालिका संख्या–5 आर्थिक स्थिति

क्रम संख्या	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	आय में वृद्धि	64	64.00
2	आय में हानि	36	36.00
	योग	**100**	**100.00**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 100 उत्तरदाता में से आय में वृद्धि होने वाले उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक हैं, प्रतिशत 64 हैं। आय में हानि दर्ज कराने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे कम है, प्रतिशत 36 हैं। अतः स्पष्ट है कि आय में वृद्धि दर्ज करने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे अधिक हैं।

तालिका संख्या–6 ग्रामीण समाज का अभिमत

क्रम संख्या	विकल्प	संख्या	प्रतिशत
1	सन्तोषजनक	58	58.00
2	सन्तुष्ट नहीं	15	15.00
3	थोड़ा बहुत सन्तुष्ट	27	27.00
	योग	**100**	**100.00**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि 100 उत्तरदाता में से सन्तोष जनक उत्तरदाता की संख्या सबसे अधिक हैं, प्रतिशत 58 हैं। सन्तुष्ट न होने वाले उत्तरदाता की संख्या सबसे कम हैं, प्रतिशत 15 हैं। थोड़ा बहुत सन्तुष्ट होने वाले उत्तरदाता का प्रतिशत 27 हैं। अतः स्पष्ट है कि जैविक खेती करने वाले सन्तोषजक उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक हैं।

निष्कर्ष– जैविक खेती का ग्रामीण समाज में प्रभाव के अन्तर्गत कार्यरत दो ग्राम पट्टीनरवर और इब्राहिमपुर नौगीर के समग्र अध्ययन के सम्बन्ध में परिलक्षित हैं–

1. जैविक खेती में कार्यरत पिछड़े वर्ग के उत्तरदाता की संख्या सर्वाधिक हैं, प्रतिशत 40 हैं।
2. जैविक रूप से कृषि करने वाले उत्तरदाता की संख्या में वर्तमान समय में वृद्धि हुई हैं।
3. उर्वरक के रूप में गोबर की खाद का इस्तेमाल करने वाले उत्तरदाता की संख्या अधिक हैं, प्रतिशत 50 हैं।
4. उत्तरदाता द्वारा अधिक मात्रा में उत्पादन आलू का हैं।
5. वर्तमान समय में उत्तरदाता जैविक कृषि से सहमत हैं।
6. उत्तरदाता द्वारा जैविक कृषि में कई प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाता हैं।
7. उत्तरदाता द्वारा जैविक कृषि में अन्य प्रकार के उर्वरक का इस्तेमाल करने वालों की संख्या सबसे कम हैं, प्रतिशत 05 हैं।

सुझाव– उत्तरदाताओं पर किये गये सर्वेक्षणों से निकाले गये निष्कर्षों के पश्चात् निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं–

1. जैविक तरीके से पैदा किए गए सब्जियों को खाने से स्वास्थ्य उत्तम रहता हैं।
2. उर्वरक का अभाव हैं।
3. उत्तरदाता को अपने खेत की मिट्टी की जाँच अवश्य करानी चाहिए।
4. मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी के हिसाब से उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए।
5. पैकेज का अभाव।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 कुमार, वीरेन्द्र, (2022), जनवरी, कुरूक्षेत्र पृ0सं0–16.
2. डॉ0 कुमार, दिनेश एवं डॉ0 शिबे, यशवीर सिंह, (2019), मई, कुरूक्षेत्र, पृ0सं0–8.
3. India Hindi Water Portal, Author सूर्यकान्त देवांगन, Source चरखा फीचर्स, Monday 9/21/2020.
4. India Hindi Water Portal, Author बाबा मायाराम, Thursday 7/18/2023.
5. डॉ0 कुमार, दिनेश एवं डॉ0 शिबे, यशवीर सिंह, (2019), मई, कुरूक्षेध्त्र, पृ0सं0–52.

*****